COURSE-2

मनुष्य में जो संपूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है।
— स्वामी विवेकानंद

शिक्षा का अर्थ (MEANING OF EDUCATION)

शिक्षा की आवश्यकता (Need of Education) :-

शिक्षा से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास में जन्म से मृत्युपर्यन्त चल रही एक व्यापक चेतना है। व्यक्ति जो कुछ सीखता, करता है, अपनाता है और अनुभव करता है, वह शिक्षा ही है। शिक्षा के द्वारा ही वह समुन्नत होता है और उसके जीवन में पूर्णता आती है। शिक्षा ही बालक की जन्मजात शक्तियों या गुणों को विकसित करके जीवन का सर्वांगीण विकास करती है। अतः शिक्षा मानवीय चेतना का वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक के व्यक्तित्व का चतुर्दिक विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ही पाषाण युग की सभ्यता से ऊपर उठकर मानव ने अपने लिए समृद्धिशाली एवं पूर्ण विकसित सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण किया।

शिक्षा का अन्योन्याश्रय संबंध जीवन से है। जीवन की विभिन्न स्थितियों, मूल्यों पर शिक्षा का व्यापक प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं

शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।

आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों ही के विकास में शिक्षा परम आवश्यक है।

शिक्षा शब्द का पर्यायवाची अंग्रेजी शब्द एजुकेशन (Education) है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ (Etymological Meaning of Education)

शिक्षा को आंग्ल भाषा में "Education" कहते हैं। शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि "Education" शब्द की व्युत्पत्ति Latin भाषा के निम्नलिखित शब्दों से हुई है—

शब्द (Words)	अर्थ (Meaning)
1. एडुकेटम (Educatum)	— To Train, act of teaching or Training (शिक्षित करना) "प्रशिक्षण" "शिक्षण"
2. एडुसीयर (Educere)	— To Lead out (विकसित करना अथवा बाहर निकालना) "प्रेरणा"
3. एडुकेयर (Educare)	— To educate, to bring up, to raise (आगे बढ़ाना, बाहर निकालना अथवा विकसित करना) "पालन-पोषण"

Educatum 'ए' (E) का अर्थ है अन्दर से तथा डुको (Duco) का अर्थ है आगे बढ़ना अथवा विकास करना अर्थात् अन्दर से विकास।

(3)

शिक्षा के उद्देश्य (AIMS OF EDUCATION)

उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Aim) – उद्देश्य एक पूर्वदर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित तथा स्पष्ट होता है तो व्यक्ति की क्रिया उस समय तक उत्साहपूर्वक चलती रहती है, जब तक वह लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेता। जैसे-जैसे लक्ष्य निकट आता जाता है वैसे-वैसे उसकी क्रियाओं में भी अन्तर आता जाता है। अन्त में एक समय ऐसा आता है जब व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इस लक्ष्य के प्राप्त करने को ही उद्देश्य प्राप्ति कहते हैं। संक्षेप में, उद्देश्य वह पूर्वदर्शित लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ चिन्तनशील रहते हुए क्रियाशील होता है।
बिना उद्देश्य के व्यक्ति जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता। मानव जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के लिए उद्देश्य का विशेष महत्व होता है।

उद्देश्य की आवश्यकता (Necessity of Aim) :-

जब व्यक्ति को किसी उद्देश्य का स्पष्ट ज्ञान होता है तो उसके मन में दृढ़ता तथा आत्मबल जाग्रत हो जाता है। इससे वह एकाग्र होकर अपने कार्य को पूरे उत्साह के साथ करने लगता है। उद्देश्य हमें शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग करने, साधनों का चयन करने, उचित पाठ्यक्रम की रचना करने तथा परिस्थितियों के अनुसार शिक्षा की व्यवस्था करने में भी सहायता प्रदान करता है। इससे व्यक्ति तथा समाज दोनों विकास

and the child is ...

की ओर अग्रसर होते रहते हैं। जिस शिक्षा का कोई उद्देश्य नहीं होता, वह व्यर्थ है। ऐसी उद्देश्य विहीन शिक्षा को प्राप्त करके बालकों में उदासीनता उत्पन्न हो जाती है। यदि अतः शिक्षण कार्य को आरम्भ करने से पूर्व बालक तथा शिक्षक दोनों को शिक्षा के उद्देश्य अथवा उद्देश्यों का स्पष्ट ज्ञान होना परम आवश्यक है।

डिवी ने कहा है कि शिक्षाशास्त्री का उद्देश्य पूर्व नियोजित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है या क्रिया करने को प्रेरित करता है।

रिवलिन ने लिखा है कि - शिक्षा अर्थपूर्ण और नैतिक क्रिया है अतएव उद्देश्यहीन शिक्षा के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में उद्देश्यों की आवश्यकता निम्नलिखित कारण से स्पष्ट होती है—

(i) औपचारिक शिक्षा का संगठन — समाज द्वारा औपचारिक शिक्षा का गठन कुछ उद्देश्यों को लेकर किया जाता है। प्रत्येक समाज मानव जीवन के कुछ उद्देश्य निर्धारित करता है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति ही शिक्षण के उद्देश्य होते हैं। शिक्षा व्यवस्था इन उद्देश्यों पर ही निर्भर होगी।

(ii) पाठ्यक्रम एवं विभिन्न शिक्षण विधियों का चयन — शिक्षा के उद्देश्य ही पाठ्यक्रम के निर्माण में सहायक होते

शिक्षा के वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्य
INDIVIDUAL AND SOCIAL AIMS OF EDUCATION

शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य (Individual Aim of Education)

वैयक्तिक उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Individual Aim) :-

शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य एक प्राचीन उद्देश्य है। इस उद्देश्य के समर्थक समाज की अपेक्षा व्यक्ति को बड़ा मानते हैं उनका विश्वास है कि व्यक्तियों के बिना समाज कोरी कल्पना है। व्यक्तियों ने ही मिलकर अपने हितों की रक्षा करने के लिए समाज की रचना की है तथा समय-समय पर संस्कृति, सभ्यता एवं विज्ञान के क्षेत्रों में भी अपना-अपना योगदान दिया है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति के विकास से ही समाज का विकास हुआ तथा दिन-प्रतिदिन हो रहा है। अतः शिक्षा को व्यक्तिगत रुचियों, क्षमताओं तथा विशेषताओं का विकास करना चाहिए।

प्राचीनकाल में ग्रीस, भारत तथा अन्य पाश्चात्य देशों में भी शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य को प्रमुख स्थान दिया ग[या] था। मध्य काल में अवश्य सामूहिक शिक्षा के ढंग को अपना[या] गया जिसके कारण व्यक्तित्व के विकास की ओर कोई ध्या[न] नहीं दिया गया। परन्तु वर्तमान युग में जब से मनो[विज्ञान] को शिक्षा के वैयक्तिक क्षेत्र में स्थान मिला तब से रू[सो,] पैस्टॉलॉजी, फ्रोबिल तथा नन आदि शिक्षा शास्त्रियों ने शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य पर फिर से बल देना आरम्[भ] कर दिया।

Scanned with CamScanner

वैयक्तिक उद्देश्य समस्त शिक्षा को व्यक्ति के [illegible] में प्रवृत्त करना चाहता है। प्रजातंत्रात्मक राज्य व्यक्ति के द्वारा सर्वतोमुखी विकास पर अधिक बल देता है इसलिए आजकल अधिकतर देशों में बच्चों की शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर दी गई है। रौस के अनुसार "सामाजिक संस्थाओं का अस्तित्व ही केवल व्यक्ति के जीवन को अधिक अधिक पूर्ण, अधिक धनी, अधिक प्रसन्न, अधिक सुरक्षित तथा अधिक लाभदायक बनाने लिए है।

(6)

<u>शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के रूप</u> — शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के दो रूप हैं।

1) आत्माभिव्यक्ति (Self-expression)

2) आत्मानुभूति (Self-realization)

1. <u>आत्माभिव्यक्ति</u> (Self-expression) — इसे वैयक्तिक उद्देश्य का संकुचित अर्थ (के रूप) में लिया जाता है। इसमें बालक की शक्तियों का सर्वांगीण विकास तथा प्राकृतिक विकास होता है। इस अर्थ में यह उद्देश्य प्रकृतिवादी दर्शन पर आधारित है। इसके प्रतिपादकों का विश्वास है कि समाज की अपेक्षा व्यक्ति बड़ा है। अतः उनकी धारणा है कि परिवार, समाज, राज्य तथा स्कूलों को बालक की व्यक्तिगत शक्तियों को विकसित करने के लिए ही स्थापित किया गया है।

प्रकृतिवादी दार्शनिक रूसो ने लिखा है — "प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट स्वभाव को लेकर जन्म लेता है। हम बिना सोचे-समझे भिन्न-भिन्न रुचियों वाले बालकों को एक ही प्रकार के कार्यों में जुटा देते हैं। ऐसी शिक्षा उनकी विशेषताओं को नष्ट करके एक निर्जीव समानता की छाप लगा देती है।" उसने यह भी [illegible]

आत्माभिव्यक्ति :- अपने-आप को व्यक्त करना। आत्म-प्रकाशन पर विशेष बल देना।
आत्माभिव्यक्ति में 'स्व' (Self) का अभिप्राय है - 'मैं जैसा हूँ उसे जानता हूँ' (Self as I know it.)
आत्माभिव्यक्ति में स्व (Self) व्यक्ति का मूर्त स्व (Concrete Self) है।

(7)

आत्मानुभूति - अन्दर (अपने आप में महसूस करना या कल्पना करना,
या आत्मानुभूति के उद्देश्य में समाज और सामाजिक वातावरण के महत्व को
आत्म-बोध स्वीकार किया गया है।
आत्मानुभूति में 'स्व' का अभिप्राय है - 'जैसा मैं उत्तम होना चाहता हूँ' (Self as I would have it to be)

2 **आत्मानुभूति** (Self-realigation) :- इसे वैयक्तिक उद्देश्य का व्यापक अर्थ के रूप में लिया जाता है। मनोविज्ञान भी व्यक्तित्व के विकास के व्यापक अर्थ का समर्थन करता है। आधुनिक मनोविज्ञान प्रयोगों ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक बालक एक-दूसरे से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक दृष्टि से भिन्न होता है। यह भिन्नता रुचियों, शक्तियों, विचारों तथा कार्य करने की क्षमता में भी होती है। यही नहीं, प्रत्येक बालक की सामान्य बुद्धि, जीवन के आदर्श तथा कार्य करने की गति में भी अन्तर होता है। किसी बालक की बुद्धि मन्द होती है, तो किसी की प्रखर। ऐसे ही एक बालक शारीरिक कार्य करने में रुचि लेता है तो दूसरा मानसिक कार्य को करना अधिक पसन्द करता है। बुद्धि तथा योग्यताओं के इन भेदों को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक बालक के लिए एकसा कठोर पाठ्यक्रम बनाकर उनको एक ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना अमनोवैज्ञानिक है।

नन के मतानुसार समाज, राज्य तथा शिक्षा संस्थाओं को बालक की रुचियों तथा प्रवृत्तियों को सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार विकसित करना चाहिए जिससे उसके व्यक्तित्व का उच्चतम विकास हो जाये तथा वह बड़ा होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सके।

रूसो - "समाज-विहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है।"

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य (Social Aim of Education)

सामाजिक उद्देश्य का अर्थ (Meaning of Social Aim):-

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को "शिक्षा का सामाजिक और नागरिकता का उद्देश्य" (Social and Citizenship Aim of Education) कहा जाता है। इस उद्देश्य के अनुसार - समाज या राज्य का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है। समाज के हित में ही व्यक्ति का हित है। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में रहकर ही वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है, अपना विकास कर सकता है और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसे सामाजिक नागरिक बनाना है, जो समाज के लिए हितकर कार्य करें तथा जिनमें प्रेम, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों का विकास हो। शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण समाज की तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

प्रो० बैगले और डॉ० डीवी के अनुसार शिक्षा में सामाजिक उद्देश्य का अर्थ है - सामाजिक कुशलता की प्राप्ति। अतः शिक्षा का उद्देश्य - प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक रूप से कुशल बनाना है। ऐसा व्यक्ति, अन्य नागरिकों और राज्य की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को सम्मान देता है।

Scanned with CamScanner